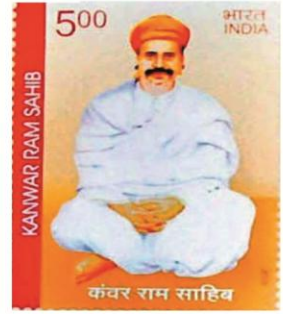




سنڌي پرويشڪا

सिंधी भाषा प्रवेशिका

SINDHI PRIMER



ई-पाठशाला

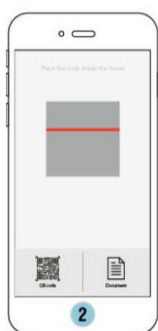
क्यूआर (QR) कोड से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्लिक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला epathshala.nic.in के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।



प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें



क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें



स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें



लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें



उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें—
<https://epathshala.nic.in/topics.php> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

 दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। दीक्षा का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।



अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें



अपनी भूमिका चुनें—शिक्षक या विद्यार्थी



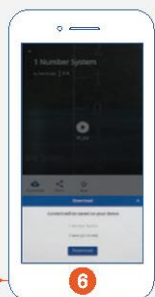
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें



क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें



कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें



क्लिक करके क्यूआर कोड से संबंधित ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें—
<https://diksha.gov.in/resources> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।



“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

سنڌي پريشڪا
सिंधी भाषा प्रवेशिका
SINDHI PRIMER



भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

سنڌي پريشڪا
सिंधी भाषा प्रवेशिका
SINDHI PRIMER

A basal reader of Sindhi alphabet (Perso-Arabic) and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Ramanujam Meganathan

ISBN: 978-81-971106-4-1

First Edition: May, 2025

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2025

All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj

Cover Photo: Sindhi Resource Persons

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.



संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary



भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy



संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चों में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मई 2025
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ڀارت صدين کان وٺي هڪ گهڻ ڀاشائي ۽ گهڻ سڀيتڪ ڏيس رهيو آهي، جنهن ۾ گهڻيئي ٻوليون / مادري ٻوليون ڳالهايون وينديون آهن. اها ان ڏيس جي اهم خوبي آهي ته اسان پنهنجي روزاني وهنوار ۾ قسمن قسمن ٻولين جو استعمال ڪندا آهيون جيڪي اسان کي ٻڌي ۽ ايڪي ۾ رکنديون آهن. نئشنل ايڊيوڪيشن پاليسي (اين ئي پي) 2020 ۾ ان ڳالهه تي وڌيڪ ٻل ڏنو ويو آهي ته ڀارت جو گهڻڀاشائي سڀاءُ هڪ تمام وڏي ملڪيت آهي، جنهنجو ڏيس جي سماجي،

سيپٽڪ، تجارتي ۽ تعليمي واڌاري لاءِ ڪاميابيءَ سان استعمال ڪرڻ جي ضرورت آهي. اها تعليم جي هر درجي تي گهڻ پاشائي ڪي واڌارو ڏيڻ جي سفارش ڪندي آهي جيئن شاگردن کي پنهنجي ٻولين ۾ پڙهڻ جو موقعو ملي سگهي. سڀني ڀارتيه ٻولين ۾ سڪڻ سيکارڻ واري مواد جي رچنا سان ان گهڻ پاشائي ملڪيت ۾ واڌارو ٿيندو ان سان ترقيافتا ڀارت کي اڏڻ ۾ بهتر يوگدان ٿي سگهندو. اين ئي پي 2020 جي سفارشن موجب، شروعاتي درجي کي پرائيمرس جو مقصد شروعات، وچ ۽ پڇاڙيءَ کي ڳنڍي ترقيءَ لاءِ هڪ ڪشادي ۽ شامل نظريعي جي ضرورت آهي جيڪو ڀارت جي هر علائقي جي نرالي ٻوليائي ۽ سيپٽڪ خوبين مطابق هجي. انهن پرائيمرس جو مقصد شروعاتي درجي جي شاگردن کي پڙهڻ ۽ لکڻ ۾ ماهر ڪرڻ ۽ سندن تخليق ۽ تنقيدي سوچ کي ترقي ڏيڻ آهي. اهو ڪنهن پاشا جي علامتن ۽ اُنجي ورڻ مالا جي اڪرن کي سڃاڻڻ، سمجهڻ ۽ اُچارڻ جي ڪُنڄي آهي. اهي پرائيمرس ٻارن کي اڪرڻ جي هڪ يا هڪ کان وڌيڪ جوڙن جي معنائن جي به ڄاڻ ڏيندا، جيڪي اڪر شروعات، وچ ۽ پڇاڙيءَ کي ڳنڍڻ سان ٺهندا آهن. ان کان سواءِ اهي اڪر لکڻ جي اڀياس کي سولو ٺاهڻ لاءِ مثال پيش ڪندا آهن ۽ اهي ٻاراڻا گيت / چنڊ ٻارن جي ٻولي ۽ سندن گيان بابت فن جي واڌاري لاءِ به مددگار ثابت ٿيندا.

مई 2025
ميسूर

پرو. شیلندر मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

CIIL-NCERT Primer Series: Sindhi Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi

Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru

Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET),
NCERT, New Delhi

Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi

Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Coordinator

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Editorial Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Ravi Prakash Tekchandani, Director, National Council for Promotion of Sindhi Language (NCPSL),
New Delhi

Reena Sirwani, Assistant Director, NCPSL, New Delhi

Indra Tekchandani, T.G.T. (Sindhi Language), Sadhu Vaswani International School for Girls, New
Delhi

Prem Ramchandani, Freelancer, Asha Gunj Ajmer, Rajasthan

Hindi Reviewer

Satyaendra Kumar Awasthi, Senior Resource Person II, Linguistic Data Consortium for Indian
Languages, CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru

Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, North Eastern Regional Language
Centre, (CIIL), Guwahati

Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages
(SPPEL), CIIL, Mysuru

Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

پرويشڪا جو استعمال ڪيئن ڪجي

نئشنل ايڊيوڪيشن پاليسي 2020 ۽ نئشنل ڪريڪلر فريم ورڪ، 2022 موجب ٽن کان اٺن سالن جي ٻارن کي سندن مادري ٻولي / گهرو ٻولي / علائقائي ٻوليءَ ۾ تعليم ڏيڻ جو بندوبست ڪيل آهي. ڀارت جي ڳوٺاڻي علائقن ۾ ٻار ڪلاس جي تعليمدان واري سرشتي کي سمجهي ڪونه سگهندا آهن. اها ڳالهه اسڪولي تعليم بندوبست کي متاثر ڪري ٿي. ان ڪري مرڪزي سرڪار ٽن کان اٺن سالن جي ٻارن لاءِ ٻال واتيڪا ۽ پهرئين ۽ ٻئين درجي جي ٻارن کي پرائمري ليول تي بنيادي تعليم ميسر ڪرڻ جو بندوبست ڪيو آهي.

ان ۾ مڪاني گيتن ۽ بيتن وسيلي ٻارن جي زباني ٻوليءَ جي واڌاري تي ڌيان ڏنو ويو آهي. اهو ڪم پرويشڪا ۾ بيتن ۽ تصويرن ذريعي ڪيو پيو وڃي. ان سان گڏ ٻارن کي آوازن جي سڃاڻپ ورڻ پريچيه ۽ لکڻ جي اڀياس لاءِ به پاشا پرويشڪا جو استعمال ڪجي ٿو.

ٻال واتيڪا سان ٻئين درجي تائين جي ٻارن کي مادر ٻوليءَ ۾ پڙهڻ سان سندن دماغي ترقيءَ انهن جي تخليقيت ۽ ڪلپنا جي طاقت ۾ به واڌارو ٿي سگهي ٿو. ٻار پنهنجي مادري ٻوليءَ پڙهڻ لکڻ سکڻ سان گڏ آهستي آهستي هندي پاشا ۾ ڪيئن پڙهي لکي سگهن ٿا، ان جو صحيح طريقو بنيادي ليول جي نئشنل ڪريڪلر فريم ورڪ 2022 ۾ وستار سان ڏنل آهي. ٻار پهرين پڙهڻ لکڻ سکندا آهن ان ڪري هندي پاشا جي ورڻمالا جي ڪتابن ۾ ٻارن جي مادري ٻولي ۽ اسڪول جي هندي پاشا جي سڀني آوازن، ورڻن ۽ ماترائون ڏنل لفظن جي چونڊ ٻارن جي سنسڪرتي ۽ ماحول مان ڪئي ويئي آهي.

گهڻپاشائي تعليم جو مول مقصد ٻارن کي گهر جي ٻوليءَ ۾ پاڙهڻ لکڻ شروع ڪري صوبي جي ٻوليءَ ۾ پڙهڻ لکڻ ۾ سندن مهارت کي وڌائڻ آهي. سنڌي ۽ هندي ٻوليءَ ۾ هيءُ پرائمري سڀني استادن ۽ تصويرن وسيلي ٻارن جي دماغي طاقت ۾ واڌارو ڪيو ويندو آهي. ان کان پوءِ پاشا سيڪارڻ لاءِ ٻارن کي شين سان گڏوگڏ اکر به سيڪاريا ويندا آهن. ان سلسلي ۾ ٻار الڳ الڳ اکرن کي سڃاڻڻ سکندا آهن. ان ريت ٻار آواز ۽ اکر جي وچ واري رابطي کي سمجهندا آهن. پاشا پرائمري کي ڪيئن پڙهڻ گهرجي، ان جا مول نقطا هيٺ ڏنل آهن :

آواز جي سڃاڻپ : ٻار تصوير ڏسي ڪري ان شيءِ جو نالو ٻڌائيندا. استاد پڇندا ته تصوير جو نالو ڪهڙي آواز سان شروع ٿئي ٿو؟ جيئن سنڌي ٻوليءَ جو لفظ ’انڊ‘ ۽ ٻار تصوير ڏسي ڪري سڃاڻي وٺندا اهو اکر ’ا‘ جي آواز سان شروع ٿئي ٿو.

اگر جي سڃاڻپ : استاد پهرين ٻارن کي اهو ٻڌائيندا ته ’ا‘ اکر ڪيئن نظر ايندو آهي. وري ان ۾ ڏنل ڪجهه لفظن ۾ ’ا‘ اکر کي سڃاڻڻ لاءِ چوندا. ٻار ٽن چئن لفظن مان ا اکر سڃاڻي ڪري ان جو آواز اُچاريندا ۽ ان کي لکڻ جو اڀياس ڪندا.

پڙهڻ: ٻار تصوير ڏسي ڪري پنهنجي ٻوليءَ ۾ اکر چوندا. اُن اکر تي آڱر رکي ٻار سنڌي اکر ’انب‘ کي پڙهندا. ان ريت ٻين اکرن کي پڙهي ڪري اُهي ’ا‘ اکر کي سڃاڻيندا ۽ اُن جو اُچار ڪندا. ٻار اُستادن کي اهو ٻڌائيندا ته ’ا‘ اکر لفظ جي شروعات ۾ ايندو آهي يا وچ ۾ يا پڇاڙيءَ ۾.

اُستاد بورڊ تي ’انب‘ کان سواءِ ٽي چار ٻيا لفظ به لکندا. وري ٻارن کي هڪ هڪ ڪري گهرائيندا ۽ کين لفظ پڙهڻ ۽ اکرن کي سڃاڻڻ لاءِ چوندا. جيئن ته اهي سڀ لفظ ٻارن کي ڄاتل سڃاتل ماحول مان کڻيل هوندا آهن ان ڪري اهي پرويشڪا ۾ تصويرن کي ڏسي ڪري لفظن کي سڃاڻي ويندا ۽ انهن کي سولائي سان چئي سگهندا. اُستاد ڪوئي هڪ لفظ لکندا ۽ اُن جي هر هڪ اکر کي الڳ الڳ پڙهڻ لاءِ چوندا. پوءِ اکرن کي ڳنڍي ڪري انهن لفظن کي پڙهڻ لاءِ چوندا. ان سان ٻارن جو لفظ، اکر ۽ آوازن سان سڃاڻپ ٿي ويندي. هڪ ٻار جڏهن اکر پڙهندو ته ٻيا ٻار هن سان ملي ڪري اُن اکر جو دهرائ ڪندا. ان کي ’گڏجي‘ پڙهڻ چوندا آهن.

لکڻ: اُستاد ٻارن کي پهرين ’انب‘ اکر جي ’ا‘ لفظ کي لکڻ سيکاريندا. ان لاءِ قلم / پينسل کي ڪيئن هلائڻو آهي، اهو به سيکاريندا. ان کي ’مددگار لکڻ‘ چوندا آهن. ان کان پوءِ ٻار پرويشڪا ۾ ڏنل خال ۾ ’ا‘ اکر پاڻ لکندا. ان پوري عمل ۾ اُستاد ٻارن جي مدد ڪندا.

ٻارن جي زباني ٻوليءَ جي واڌاري لاءِ هر داخلا ۾ ٻن ٽن ستن جي ڪوتا ڏنل آهي. ان کي پڙهي ڪري ۽ ڳائي ڪري اُستاد ٻارن سان اُن تي بحث ڪندا. اُستاد اسڪول جي لائبريري ۾ موجود ٻاراڻي ڪهاڻين جي ڪتاب مان ڪهاڻيون ٻڌائي ڪري ٻارن سان اُن تي به بحث ڪندا. اُهي پهرئين ۽ ٻئين درجي جي ٻارن کي سندن مادري ٻوليءَ ۾ ڪهاڻيون ۽ گيت ٻڌائيندا.

ان پرويشڪا ۾ جيترا لفظ ڏنل آهن، اُهي تعليم جي نموني طور آهن. پر ٻار سوين لفظ ڄاڻندا آهن. ان ڪري هڪ اکر وارو لفظ پڇڻ تي هو گهڻيئي لفظ ٻڌائي سگهن ٿا. جيئن، اُستاد اهو پڇندا ته: ’ا‘ سان شروع ٿيڻ وارا ڪجهه لفظ ٻڌايو.

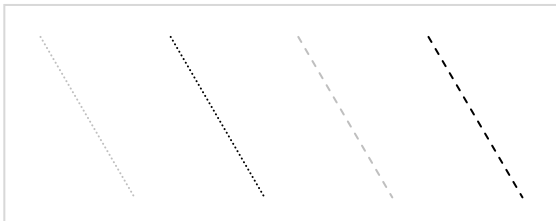
هيٿين ليڪن کي ڏسو ۽ ڏنل خالن ۾ تسويرون ٺاهڻ جي ڪوشش ڪيو



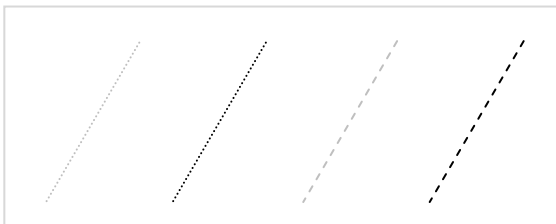
بيٺل ليڪ



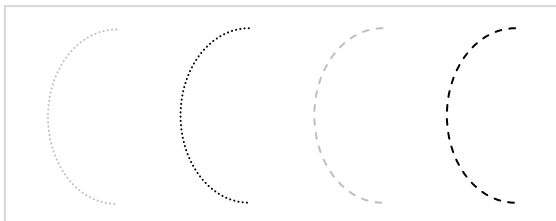
سميھل ليڪ



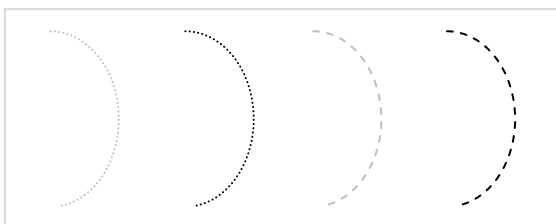
1 آڏي ليڪ



2 آڏي ليڪ



1 ڏنگي ليڪ



2 ڏنگي ليڪ

نوٽ : اوستاد سيڪاريندو ته قلم کي ڪئين هٿ سان جهلڻو آهي ۽ ڏنل خالن ۾ ليڪون ڪيڏيون آهن .

ورٹ مالا

سور ورٹ

ا	آ	اِ	اي	أ
او	اي	ايِ	او	او

وينجن ورٹ

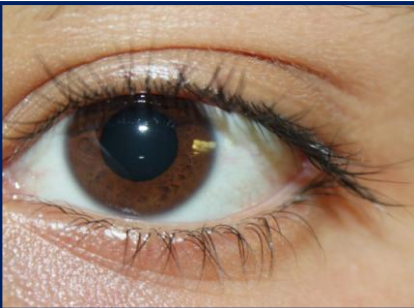
ب	پ	پ	پ
ت	ث	ث	ث
ث	ج	ج	جھ
چ	چ	د	د
ڈ	ب	د	ر
ڑ	ج	ز	س
ش	قا	ک	ک
گ	پک	گھ	نگ
ل	م	ن	ٹ
و	هه	ي	ض
ظ	ط		

ا

انْبُ

आम

منو منو تازو انْبُ
سپني فلن جو راجا انْبُ



اِکِ

आँख



انگور

अंगूर



आकरोٽ

अखरोट

ا

ا

ا

آ

آکيرو

घोंसला

آکيرو ڀلي ننڍو آهي پکيُن
جو،
پرَ حوصلو ٻُڌڻ آهي آکاس
کي چُهڻ جو



آکاسُ

आकाश



اڱرُ

उंगली



آبُ

पानी

آ

آ

آ

اسپتال

अस्पताल

اسپتال هڪ اهڙو آستان
جتي ٿئي هر علاج آسان



انعام

इनाम



عمارت

इमारत



اٽي ڏڪر

गिली डंडा



اي

ايجاد

खोज

ايجاد سان ڪرانتني اچي ٿي



اي ميل

ई- मेल



عِذاء

पीड़ा

ي

ي

اي

اي

اي

ا

اُٹ

اُٹ

اُٹ پریو بہ رَڑی
تہ سِکُٹو بہ رَڑی



اُکری

ओखली



عقاب

चील



اُلو

उल्लू

ا

ا

ا

اُو

اونده

अँधेरा

اڳيانُ آهي اوندہ
تہ گيانُ آهي روشني



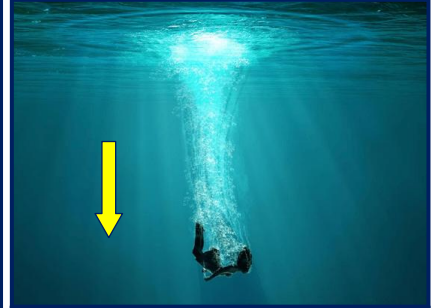
اوني

ऊन



اونهارو

गर्मी



اونهائي

गहराई

اُو

اُو

اُو

اي

ايڪتا

एकता

ايڪتا ۾ آهي شانُ اسان جو.
ايڪتا ۾ آهي مانُ اسان جو



امببولنس

एम्बुलेंस



ايڪانڪي ناٽڪ

एकांकी नाटक

اي

اي

اي

اي

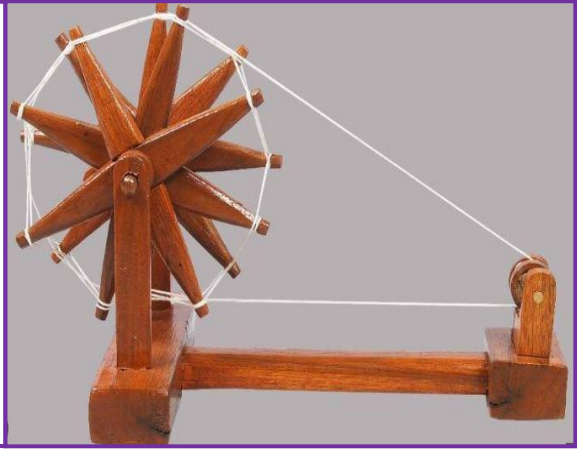
اي

عیٹ

ع

चरखा

عیٹُ اِجا مان نندیڙي آهیان،
نیٹِ وڏي به ته ٿیندس.



عینک

चश्मा

ڪ

عیراب

डायक्रिटिक मार्क



عئشُ

आनंद

ع

ع

ع

او

اوزار

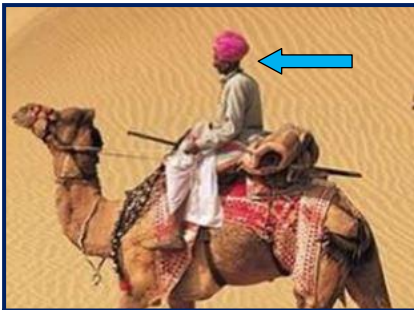
औज़ार

جا دِل نہ گُلي یارنِ سان
سا وري گُلي اوزارنِ سان



اوه

थन



اوني

ऊँट चालक



اوس

ओस

او

او

او

اؤ

عورت

महिला

قُدرت جي آهي انمول نعمت
ڌيءَ، پيٽ، ماءُ ۽ عورت



اوشد

दवा



اولاد

संतान

اؤ

اؤ

اؤ

اؤ

اؤ

ک

کَر

बादल

آسمان ۾ ڪڪر ڪارا ڪارا،
بار نچن موئج ۾ متوارا،



گَنورُ

कमल



ڪڇون

कछुआ



ڪٿورو

कटोरा

ک

ک

ک

ق

قلم

कलम

قلمُ آهي بيمثالُ ،
لکت آهي لاجوابُ



قبر

कब्र



قلو

किला



قُدرت

प्रकृति

ق

ق

ق

ک

کنب

पंख

نار کولي کنپ اُدامي
دِچُ نه کنهنجي ڏاڍ کان



کستوري

कस्तूरी (सुगंध)



काजा

काजू



کجور

खजूर

ک

ک

ک

خ

خط

पत्र

تپالي او تپالي
گهوت جو خط ڏيکار



خيچر

खच्चर



خزانو

खज़ाना



خرگوش

खरगोश

خ

خ

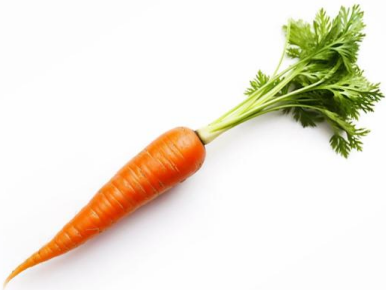
خ

گ

گانء

गाय

گانء ماتا،
سپُ سڪُ داتا.



گجر

गाजर



گڈھ

गधा



گپ

कीचड़

گ

گ

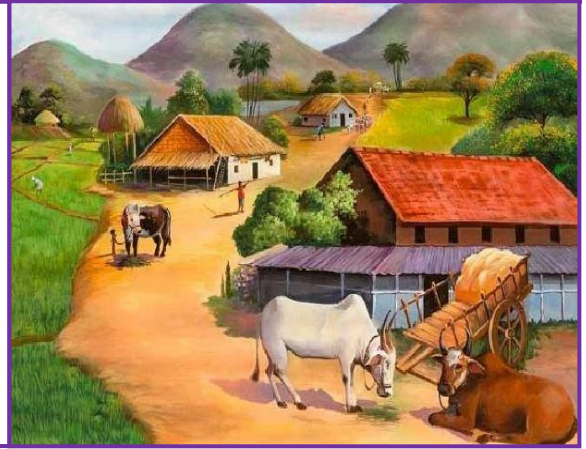
گ

گ

ڳوٺ

गाँव

جتي ڳوٺي اُتي ڳوٺ
جتي سنڌي تي سنڌ



ڳنڊ

गाँठ



ڳڻ

गुड़



ڳيرو

नवोदित युवा

ڳ

ڳ

ڳ

غاليچو

غ

कालीन

رنگ برنگي غاليچو،
گهر جي سونهن وڌائي غاليچو



غُفا

गुफा



غوتو

गोता



غورابُ

जहाज

غ

غ

غ

گهه

گهوڙي

ঘোড়ী

گهوٽ چڙهي گهوڙي
تون هلي اچُ ڊوڙي



گهنٽي

घंटी



گهرُ

घर



گهاگهرِ

गागर

گهه

گهه

گهه

ڇنگُ

ڇ

ڇنگو

ڇارڻ ڇوريو ڇنگُ
واھ! سنگيت جو رنگُ



ڇاڪليٽُ

ڇاڪلٽ



ڇڪلو

ڇاڪلي



ڇيتو

ڇيٽا

ڇ

ڇ

ڇ

چولا

ج

चना

دال، چولا، دپل،
تون کائي وٹ شل.



چتي

छाता



چوکري

लड़की



چت

छत

ج

ج

ج

جوگی

ج

तपर-वी

جوگی جادو لائي ويا،
مونكي کين بُڌائي ويا



جلُ

पानी



جهازُ

जहाज



جادوگرُ

जादूगर

ج

ج

ج

ج

چپ

जीभ

چپ آهي لاجواب،
وٺي هر شيءِ جو سوادُ



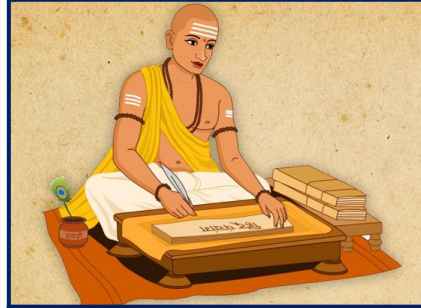
ڄڻ

बारात



ڄمون

आलू बुखारा



ڄاڻو

ज्ञाता

ج

ج

ج

ز

زال

पत्नी

زال ترِیا پکوڑا،
مون جو کاذا پکوڑا،
مرچ ایذا وِڌائين،
وهڻ لڳا ڳوڙها.



زخم

घाव



زمین

जमीन

ز

ز

ز

ز

ز

جھه

جهرِ مر

سيتاروں کی झيلميل

جهرِ مرِ جگ ۾ جوتِ جگي ٿي،
سُھڻي سوپيا سُرُسُ لڳي ٿي.



جھنگُ

جنگل



جھرڻو

झरना



جھرڪي

चिड़िया

جھه

جھه

جھه

ت

ٲوڪرو

ٲوڪرا

چوڪرڻ ۾ چوڪرو، ڪن جو
ٲوڪرو.
رات ڀريندو ڀاڻي، صبح ڪندو
سلام.



ٲوپي

ٲوپي



ٲماٽو

ٲماٽر



ٲپالي

ڊاڪيا

ت

ت

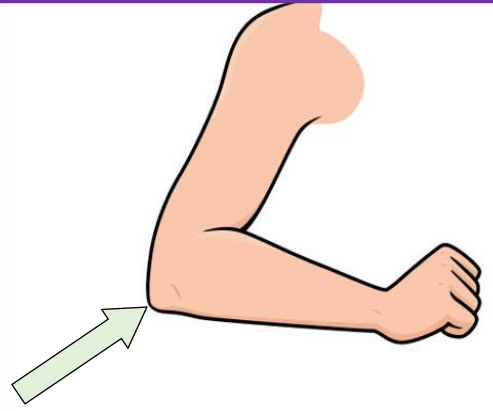
ت

ث

نونٹ

कोहनी

”نونٹ لڳي، ساهيڙي ڀڳي“



نپو

मुहर



نونشو

मुक्का



نانارو

ताँबा कारीगर

ث

ث

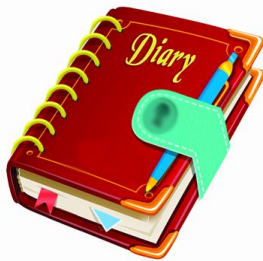
ث

ڊڪٽ

ڊ

बढ़ई

ڊڪٽ درُ ڪٽڙ ڪايو،
چوڪرُ ڊوڙي آيو



ڊائري

डायरी



ڊيل

मोरनी



ڊسٽر

डस्टर

ڊ

ڊ

ڊ

ڏ

ڏياري

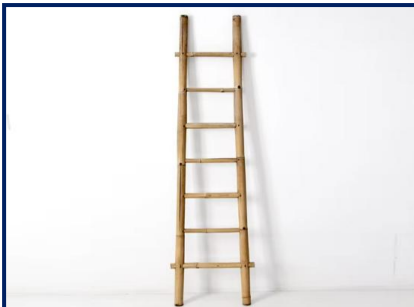
दिवाली

ڏياري ماما، ڀلي ڪري آئي،
ننڍي وڏي ڦٽاڪا ٻاري، ڏياري
خوب ملهائي.



ڏند

दांत



ڏاڪڙ

सीढ़ी



ڏيڏر

मेंढक

ڏ

ڏ

ڏ

ڊولڪ

ڊ

ڌولڪ

ڊولڪ وڄايو، ساز وڄايو،
مؤج مڇايو، هولي ملهايو.



ڍنڍ

ڙيل



ڍڳو

بيل



ڍڪُ

ڌڪڪن

ڊ

ڊ

ڊ

ت

تارو

तारा

اُپ ۾ تارا لکين هزار،
سائين جي مهما اپار.



تصوير

तस्वीर



ताج

मुकुट



طعام

पकवान

ت

ت

ت

ط

کٹک

गेहूँ

کٹک هر گهر جو پندار
هر کوكائي غريب توڑي
شاهكار



ماٹک

माणिक



ونٹ

पेड़



واگٹ

बैंगन

ط

ط

ط

ت

ٿڀو

खंभा

ري ٿڀي، ري ٿوڀي.
تون چڀر، تون چانو



ٿالهي

धातु की प्लेट



ٿڌڙي

सिंधी त्यौहार



ٿيلهو

थैला

ت

ت

ت

د

دِل

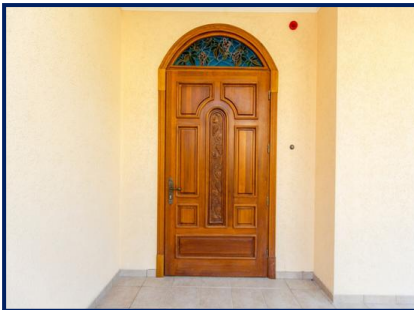
दिल

دِل تَنهِنجِي مُنَهِنجِي هِڪَ آءِ
ڏاڍِي اسان پَنهي ۾ سِڪَ آءِ.



دِڳُ

पथ



دروازو

दरवाज़ा



دالِ پڪوان

सिंधी पकवान

د

د

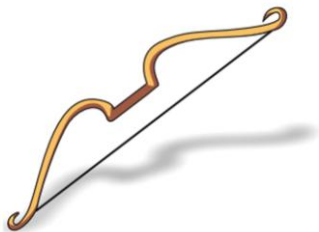
د

ڌ

ڌاڻا

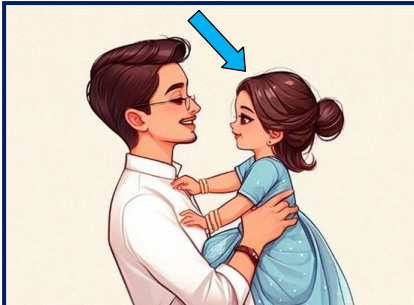
ڌننڀا

ساوا ڌاڻا واھ واھ ڌاڻا
ڀاڄيءَ جو سواڻ وڌائڻ وارا



ڌڻش

ڌنوش



ڌيءُ

بھڻي



ڌوبڻي

ڌوبڻي

ڌ

ڌ

ڌ

ن

ننھن

ناखून

اگر ننھن ڄايو،
لوڪ تماشو آيو



نڪُ

نانگُ

نمستي

नाक

साँप

सम्मानपूर्ण अभिवादन

ن

ن

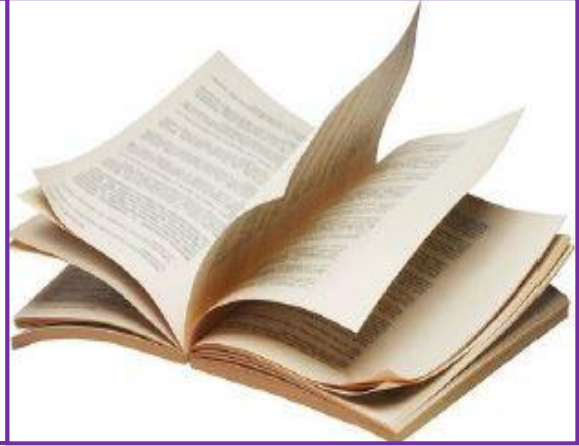
ن

پ

پنو

पृष्ठ

اکر پڑھ الف جو، ورق سپ
وسار،
اندر تون ازار، پنا پڑھندي
کيترا



پوپٹ

तितली



پپر

पीपल का पेड़



پاپڑ

पापड़

پ

پ

پ

ف

قوڪڻو

गुब्बारा

قوڪي ڦاڙ نه قوڪڻو،
منهنجو آهي ملوڪڻو



ڦيٽو

ڦل

ڦڻي

पहिया

फल

कंघी

ف

ف

ف

ف

فؤج

सेना

ديشُ رسيو جنهن اُج تي،
نازُ آهي تنهن فؤج تي.



فرهي

स्लेट



فقير

उपासक



فنکارُ

कलाकार

ف

ف

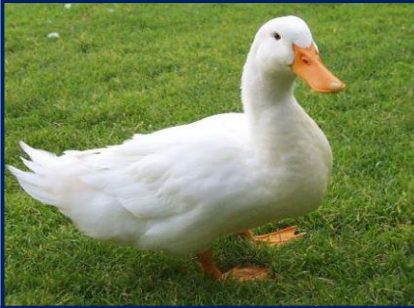
ف

ب

باندرُ

बंदर

نچي ٿپي ۽ موج مچائي،
باندرُ مامو دل وِندُراءِ!



بدڪ

बत्तख



بگهڙُ

भेड़िया



برساتِ

बारिश

ب

ب

ب

پ

پانھن

باھ

ڪو سڄڻُ سڄي پانھن ڏئي،
تہ سڄي نہ ڳھجي!



پڪري

बकरी



پيڙي

नाव



پلي

बिल्ली

پ

پ

پ

پ

پت

دیوار

پرائو محلُ ڈسي
پنهنجو پونگو نه ڊاهجي



پندي

پت

پگت

भिंडी

दलिया

सिंधी भक्ति गायन

پ

پ

پ

م

مکڻ

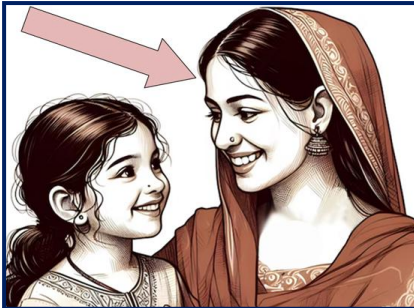
मकखन

ماءُ چوي ٿي پُٽ کي،
پُٽ! مکڻ وٺي ڪاءُ.



مڇي

मछली



ماءُ

माँ



ماکوڙو

बड़ी काली चींटी

م

م

م

ي

يارُ

मित्र

يارُ ته ڪجي هڪڙو،
گهڻا ڪجن نه يار.



يڪتارو

एक तार वाला वाद्य



ياقوتُ

रक्तमणी



ينتر

उपकरण

ي

ي

ي

راجا



राजा

ڪوئي راجا، ڪوئي فقير،
بازيگر جي بازي آ



رکڙي

राखी



رانديڪا

खिलौना



رتن

रत्न



ل

لاڏي

दुल्हन

لاڏو لاڏي آڻيندو،
شهjadi آڻيندو.



لڪُڻُ

छड़ी



لغڙُ

पतंग



لوٽو

लोटा

ل

ل

ل

و

وار

बाल

سواري وار، कारा कारा
هل گهمٹ او متوارا



واچو

बाजा



वाग्हो

मगरमच्छ



वङ्गो

खीरा

و

و

و

س

سندلُ

चंदन

سندلُ خوشبوءِ جو آ پندارُ،
مهڪ سان روشنُ سڄو سنسارُ



سَمُندُ

समुद्र



سَنکُ

शंख



سِنگترو

संतरा

س

س

س

ش

شريرُ

शरीर

شريرُ آهي مندرو،
صافُ رِکجي اندرو



شينهن

शेर



شهتوت

शहतूत का फल



शربتُ

शरबत

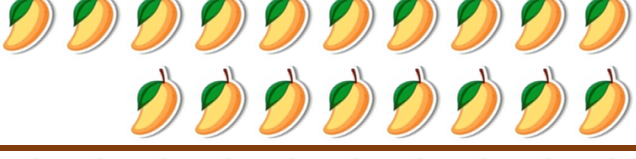
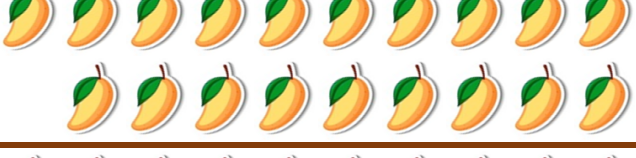
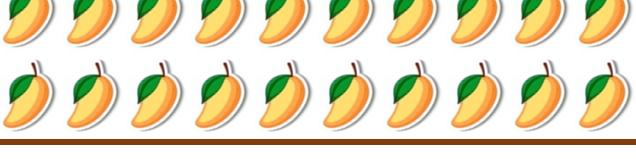
ش

ش

ش

ٻڳئون تہ اچو

1		هڪ	۱
2		ٻہ	۲
3		ٽي	۳
4		چار	۴
5		پنج	۵
6		ڇھ	۶
7		ست	۷
8		اٺ	۸
9		نو	۹
10		ڏھہ	۱۰

11		يارهان	۱۱
12		بارهان	۱۲
13		تيرهان	۱۳
14		چوڏهان	۱۴
15		پندرهان	۱۵
16		سورها	۱۶
17		سترهان	۱۷
18		ارڙهان	۱۸
19		اڻويهه	۱۹
20		ويهه	۲۰

لکو نمبر هیئین

۱	۱	۱	۱	
۲	۲	۲	۲	
۳	۳	۳	۳	
۴	۴	۴	۴	
۵	۵	۵	۵	
۶	۶	۶	۶	
۷	۷	۷	۷	
۸	۸	۸	۸	
۹	۹	۹	۹	
۱۰	۱۰	۱۰	۱۰	

١١	١١	١١	١١	
١٢	١٢	١٢	١٢	
١٣	١٣	١٣	١٣	
١٤	١٤	١٤	١٤	
١٥	١٥	١٥	١٥	
١٦	١٦	١٦	١٦	
١٧	١٧	١٧	١٧	
١٨	١٨	١٨	١٨	
١٩	١٩	١٩	١٩	
٢٠	٢٠	٢٠	٢٠	

سنڌي ورڻمالا

سور ورڻ

अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ अं अः

وينجن ورڻ

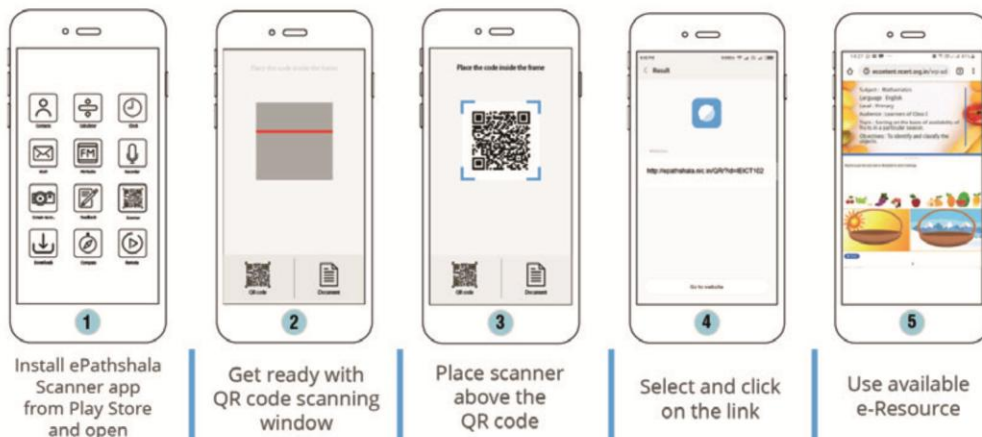
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह		

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala .

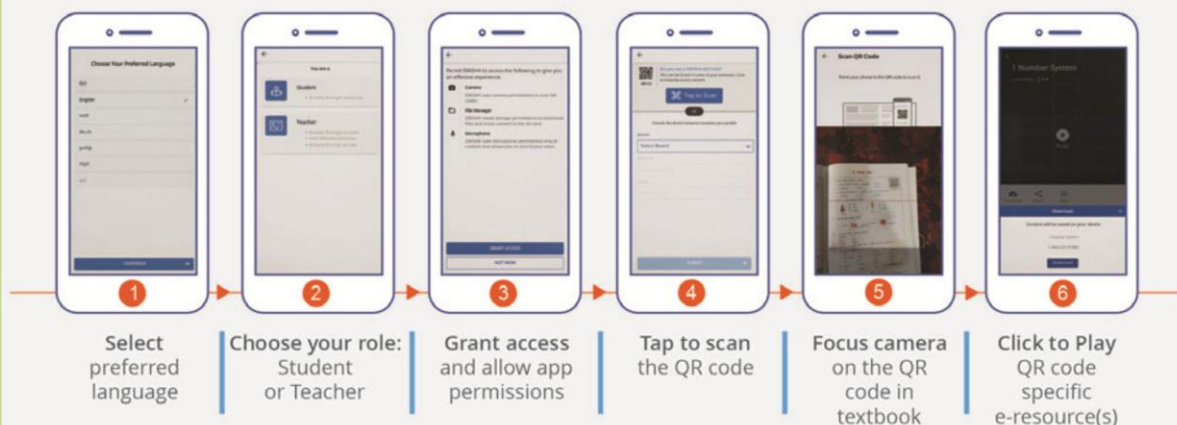


For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://epathshala.nic.in/topics.php> and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download DIKSHA app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using DIKSHA .



For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to <https://diksha.gov.in/resources> and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAO	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDSHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHLE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PÜ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANCOWRY (MÖUT)	104	TELUGU

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-IV (13)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI (PERSO-ARABIC)	108	GONDI-TELUGU	111	LAI (PAWI)	114	SINDHI (DEVANAGARI)	116	URDU
106	BHILI (WAGDI)	109	KASHMIRI (DEVANAGARI)	112	SANGTAM	115	SINDHI (PERSO-ARABIC)	117	ZEME (ZEMI)
107	CHOKRI	110	KASHMIRI (PERSO-ARABIC)	113	SANTALI (JHARKHAND)				

PRIMERS UNDER PREPARATION (8)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
118	GANGTE	120	KOKBOROK (TRIPURI)	122	SANSKRIT	124	VAIPHEI
119	HINDI	121	PAITE	123	THADOU-KUKI	125	ZOU



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006

☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016

☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in